I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

# E.S.O.-11

# समाज का अध्ययन

## ( Study of Society )

By: Poonam Maurya M.A. (Sociology)

**Question Bank Cum Chapterwise Reference Book**
**Including Many Solved Question Papers**

**NEERAJ PUBLICATIONS**
*(Publishers of Educational Books)*
( An ISO 9001 : 2008 Certified Company )

**Sales Office:**
**1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6**
**Ph.: 011-23260329, 45704411,**
**23244362, 23285501**
**E-mail: info@neerajignoubooks.com**
**Website: www.neerajignoubooks.com**

**MRP ₹ 200/-**

***Published by:***

**NEERAJ PUBLICATIONS**

*Sales Office* : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
*E-mail*: **info@neerajignoubooks.com**
*Website*: **www.neerajignoubooks.com**

***Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only*** | *Typesetting by: Competent Computers* | *Printed at: Novelty Printer*

***Notes:***

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The numb.er of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

**© Reserved with the Publishers only.**

***Spl. Note:*** *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

## *How to get Books by Post (V.P.P.)?*

*If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website* ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time ( Time of Your Order).*

*To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website* ***www.neerajignoubooks.com.***

*No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.*

*We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).*

**NEERAJ PUBLICATIONS**

*(Publishers of Educational Books)*

( An ISO 9001 : 2008 Certified Company )

***1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006***

***Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501***

*E-mail:* **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

# CONTENTS

# समाज का अध्ययन
## ( Study of Society )

***Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)***


| | |
|---|---|
| *Question Paper—June, 2019 ( Solved )* | 1-4 |
| *Question Paper—December, 2018 ( Solved )* | 1-4 |
| *Question Paper—June, 2018 ( Solved )* | 1-3 |
| *Question Paper—December, 2017 ( Solved )* | 1-6 |
| *Question Paper—June, 2017 ( Solved )* | 1-4 |
| *Question Paper—December, 2016 ( Solved )* | 1-4 |
| *Question Paper—June, 2016 ( Solved )* | 1-4 |
| *Question Paper—December, 2015 ( Solved )* | 1-5 |
| *Question Paper—June, 2015 ( Solved )* | 1-3 |
| *Question Paper—June, 2014 ( Solved )* | 1-2 |
| *Question Paper—June, 2013 ( Solved )* | 1-2 |
| *Question Paper—June, 2012 ( Solved )* | 1-2 |
| *Question Paper—June, 2011 ( Solved )* | 1 |
| *Question Paper—June, 2010 ( Solved )* | 1 |


| *S.No.* | *Chapterwise Reference Book* | *Page* |
|---|---|---|


**समाजशास्त्र को समझना**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | समाजशास्त्र की प्रकृति और उसका क्षेत्र | 1 |
| 2. | समाजशास्त्र की मूल संकल्पनाएँ | 7 |
| 3. | सरल समाज | 13 |
| 4. | जटिल समाज | 16 |

**समूह और संस्थाएँ**

| | | |
|---|---|---|
| 5. | परिवार | 18 |
| 6. | विवाह | 20 |
| 7. | नातेदारी | 23 |

| S.No. | Chapter | Page |
|---|---|---|
| | **समाजीकरण और शिक्षा** | |
| 8. | समाजीकरण की प्रकृति | 25 |
| 9. | समाजीकरण के अभिकरण | 28 |
| 10. | शिक्षा की प्रक्रियाएँ | 31 |
| 11. | शिक्षा संस्थाएँ | 35 |
| | **आर्थिक प्रक्रियाएँ** | |
| 12. | अर्थव्यवस्था तथा प्रौद्योगिकी | 38 |
| 13. | उत्पादन प्रक्रियाएँ | 43 |
| 14. | वितरण प्रक्रियाएँ | 46 |
| 15. | उपभोग का स्वरूप | 48 |
| | **राजनीतिक प्रक्रियाएँ** | |
| 16. | राज्यविहीन समाज | 51 |
| 17. | परंपरागत समाजों में राज्य की संकल्पना | 53 |
| 18. | आधुनिक समाज | 55 |
| 19. | राज्य तथा अन्य संस्थाएँ | 59 |
| | **संस्कृति तथा धर्म** | |
| 20. | धार्मिक विश्वास और प्रथाएँ | 65 |
| 21. | संस्कृति–I | 68 |
| 22. | संस्कृति–II | 71 |
| 23. | मूल्य | 73 |
| 24. | प्रतिमान | 75 |
| | **सामाजिक संरचना** | |
| 25. | सामाजिक संरचना की संकल्पनाएँ | 78 |
| 26. | सामाजिक भूमिकाएँ | 81 |
| 27. | सामाजिक तंत्र | 83 |
| 28. | सामाजिक प्रकार्य की संकल्पनाएँ | 85 |
| 29. | सामाजिक स्तरण | 88 |

| S.No. | Chapter | Page |
|---|---|---|
| | **सामाजिक नियंत्रण, परिवर्तन और विकास** | |
| 30. | सामाजिक नियंत्रण | 92 |
| 31. | सामाजिक विचलन | 96 |
| 32. | सामाजिक संघर्ष की प्रकृति | 99 |
| 33. | सामाजिक परिवर्तन | 102 |
| 34. | सामाजिक विकास | 105 |


❐❐

# Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

*Published by:*

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

# QUESTION PAPER

*(June – 2019)*

*(Solved)*

## समाज का अध्ययन

*समय : 2 घण्टे ]* *[ अधिकतम अंक : 50*

***नोट :*** *इस प्रश्न-पत्र में **तीन** भाग हैं। प्रश्नों के **तीन** भाग हैं। प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए।*

### भाग–I

**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

**प्रश्न 1. साधारण और जटिल समाज में अंतर स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ**–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-13, प्रश्न 1, अध्याय-4, पृष्ठ-16, प्रश्न 1, 2

**प्रश्न 2. विवाह की संस्था में होने वाले परिवर्तनों की चर्चा कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ**–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-22, प्रश्न 5

**इसे भी देखें**–प्लेटो के समय से विचारक विवाह-प्रथा की समाप्ति की तथा राज्य द्वारा बच्चों के पालन की कल्पना कर रहे हैं। वर्तमान समय के औद्योगिक एवं वैज्ञानिक परिवर्तनों से तथा पश्चिमी देशों में तलाकों की बढ़ती हुई भयावह संख्या के आधार पर विवाह की संस्था के लोप की भविष्यवाणी करने वालों की कमी नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस समय विवाह के परंपरागत स्वरूपों में कई कारणों से बड़े परिवर्तन आ रहे हैं। विवाह को धार्मिक बंधन के स्थान पर कानूनी बंधन तथा पति-पत्नी का निजी मामला मानने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। औद्योगिक क्रांति और शिक्षा के प्रसार से स्त्रियां आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बन रही हैं। पहले उनके सुखमय जीवनयापन का एकमात्र साधन विवाह था, अब ऐसी स्थिति नहीं रही। विवाह और तलाक के नवीन कानून दांपत्य अधिकारों में नर-नारी के अधिकारों को समान बना रहे हैं। धर्म के प्रति आस्था में शिथिलता और गर्भनिरोध के साधनों के आविष्कार ने विवाह विषयक पुरानी मान्यताओं को, प्राग्वैवाहिक सतीत्व और पवित्रता को गहरा धक्का पहुंचाया है। किंतु ये सब परिवर्तन होते हुए भी भविष्य में विवाह प्रथा के बने रहने का प्रबल कारण यह है कि इससे कुछ ऐसे प्रयोजन पूरे होते हैं, जो किसी अन्य साधन या संस्था से नहीं हो सकते। पहला प्रयोजन वंश वृद्धि का है। यद्यपि विज्ञान ने कृत्रिम गर्भाधान का आविष्कार किया है किंतु कृत्रिम रूप से शिशुओं का प्रयोगशालाओं में उत्पादन और विकास संभव प्रतीत नहीं होता। दूसरा प्रयोजन संतान का पालन है, राज्य और समाज शिशुशालाओं और बालोद्यानों का कितना ही विकास कर ले, उनमें इनके सर्वांगीण समुचित विकास की वैसी व्यवस्था संभव नहीं, जैसी विवाह एवं परिवार की संस्था में होती है। तीसरा प्रयोजन सच्चे दांपत्य प्रेम और सुख प्राप्ति का है। यह भी विवाह के अतिरिक्त किसी अन्य साधन से संभव नहीं। इन प्रयोजनों की पूर्ति के लिए भविष्य में विवाह एक महत्त्वपूर्ण संस्था बनी रहेगी, भले ही उसमें कुछ न कुछ परिवर्तन होते रहें।

'स्मृति' काल से ही हिंदुओं में विवाह को एक पवित्र संस्कार माना गया है और हिंदू विवाह अधिनियम 1955 में भी इसको इसी रूप में बनाए रखने की चेष्टा की गई है। किंतु विवाह, जो पहले एक पवित्र एवं अटूट बंधन था, अधिनियम के अंतर्गत, ऐसा नहीं रह गया है। कुछ विधि विचारकों की दृष्टि में यह विचारधारा अब शिथिल पड़ गई है। अब यह जन्म जन्मांतर का संबंध अथवा बंधन नहीं वरन् विशेष परिस्थितियों के उत्पन्न होने पर, (अधिनियम के अंतर्गत) वैवाहिक संबंध विघटित किया जा सकता है।

**प्रश्न 3. समाजीकरण में शिक्षा और मीडिया की भूमिका का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ**–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-28, 'परिचय', पृष्ठ-29, 'शिक्षा', 'जनसंपर्क के माध्यम', पृष्ठ-30, प्रश्न 4, 6

**प्रश्न 4. विकास के सामाजिक-सांस्कृतिक आयामों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ**–देखें अध्याय-34, पृष्ठ-105, 'परिचय', पृष्ठ-106, प्रश्न 6, 7, 9

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



## भाग–II

**निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

**प्रश्न 5. सामाजिक संरचना पर संरचनात्मक–प्रकार्यवादी दृष्टिकोण का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ**–देखें अध्याय-25, पृष्ठ-78, 'परिचय', अध्याय-28, पृष्ठ-85, प्रश्न 1, पृष्ठ-86, प्रश्न 4

**प्रश्न 6. साधारण समाजों में जादू की भूमिका का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–धर्म**–व्यापक रूप से संस्कृति शब्द के अन्तर्गत सभी मानवीय कार्यकलापों तथा नियमितताओं और सामाजिक जीवन के सभी कार्यों का समावेश हो जाता है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित होते रहते हैं। इसका संचरण आनुवंशिक संचरण से अलग होता है। प्रत्येक समाज की अपनी अलग-अलग संस्कृतियाँ होती हैं जिनमें पर्यावरण, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व परिवेश आदि के अनुसार भिन्नता होती है। मानव जाति की आलौकिक नियंत्रण शक्ति में अत्यधिक आस्था है और उसी आस्था का नाम धर्म है। धर्म हिन्दू समाज की प्रथम संस्था है। यह संस्था अन्य सभी संस्थाओं को प्रभावित करती है। हिन्दू समाज में धर्म के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण पाया जाता है। समाज की सभ्यता और संस्कृति में धर्म को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है। जीवन के समस्त पक्ष धर्म से नियमित, परिभाषित और प्रभावित होते रहते हैं।

**जादू**–जादू वह शक्ति है, जिससे अति मानवीय जगत पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सके और उसकी क्रियाओं को अपनी इच्छानुसार शुभ या अशुभ हेतु उपयोग में लाया जा सके।

फ्रेजर के अनुसार, 'जादू प्रकृति पर नियंत्रण पाने का एक साधन है।'

*मलिनॉवस्की* के अनुसार, 'जादू विशुद्ध व्यावहारिक क्रियाओं का एक योग है, जिन्हें उद्देश्यों की पूर्ति के साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है।' जादूगर जादू की क्रियाओं द्वारा, जिनको वैज्ञानिक ज्ञान समर्थित नहीं करता, प्राकृतिक शक्तियों पर नियंत्रण पाने का भी प्रयास करता है। ऐसी अनेकों क्रियाएँ हैं, जैसे–रोगी शरीर के किसी भी अंग पर पत्थर रगड़ना, बिना जले धधकती हुई आग (अँगारों) पर चलना। विद्यार्थियों के लिए यह आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

जादू दो प्रकार का होता है–अनुकरणात्मक तथा संक्रामक। जादू व धर्म में अन्तर होता है। धर्म का कोई निश्चित लक्ष्य नहीं होता। धर्म स्वयं एक लक्ष्य है, उपासकों को आध्यात्मिक शक्तियों के सम्पर्क में लाने का।

अत: धर्म की अपनी केन्द्रीय विषय-वस्तु होती है, जिसका निर्धारण लोगों के जीवन में हितों के आधार पर किया जाता है।

**प्रश्न 7. धर्म की चर्चा, सामाजिक परिवर्तन के अभिकरण के रूप में कीजिए।**

**उत्तर–संदर्भ**–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-65, 'परिचय', प्रश्न 1

**प्रश्न 8. पितृव:शीय समाज किस तरीके से मातृवंशीय समाज से भिन्न है? उचित उदाहरण देते हुए समझाइये।**

**उत्तर–संदर्भ**–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-24, प्रश्न 3, 4

**प्रश्न 9. संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्पष्ट कीजिये।**

**उत्तर**–प्राय: सभ्यता और संस्कृति को समानार्थी समझ लिया जाता है, जबकि ये दोनों अवधारणाएं अलग-अलग हैं। तथापि विभेद ठीक वैसा ही है, जैसे हम एक फूल को सभ्यता और उसकी सुगन्ध को संस्कृति कहें। सभ्यता से किसी संस्कृति की बाहरी चरम अवस्था का बोध होता है। संस्कृति विस्तार है तो सभ्यता कठोर स्थिरता। सभ्यता में भौतिक पक्ष प्रधान है, जबकि संस्कृति में वैचारिक पक्ष प्रबल होता है। यदि सभ्यता शरीर है तो संस्कृति उसकी आत्मा।

सभ्यता और संस्कृति में निम्नलिखित अन्तर पाये जाते हैं-

सभ्यता और संस्कृति में मौलिक अन्तर यह है कि सभ्यता का सम्बन्ध जीवनयापन या सुख-सुविधा की बाहरी वस्तुओं से है, जबकि संस्कृति का सम्बन्ध आन्तरिक वस्तुओं से।

सभ्यता की माप की जा सकती है, किन्तु संस्कृति की माप नहीं की जा सकती। उदाहरण के लिए-ऐसा बता देना अधिक आसान है कि साइकिल की अपेक्षा मोटरगाड़ी अधिक उपयोगी है, किन्तु प्रमाण प्रस्तुत करना कठिन है कि पश्चिमी संस्कृति की अपेक्षा भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ है। इसके लिए कोई भी मापदण्ड नहीं है।

सभ्यता की उन्नति अल्पकाल में होती है, जबकि संस्कृति विस्तृतकालीन सभ्यता की परिणति है।

सभ्यता का प्रसार तीव्र गति से होता है, किन्तु संस्कृति का प्रसार धीरे-धीरे, लेकिन लगातार होता है।

सांस्कृतिक वस्तुएं प्रतियोगिता रहित होती हैं, किन्तु सभ्यता का आधार प्रतियोगिता है। दो आविष्कारों में प्रतियोगिता होती है, किन्तु आध्यात्मिकता में कोई प्रतियोगिता नहीं होती।

सभ्यता साधन है, जबकि संस्कृति साध्य है। साध्य का तात्पर्य अन्तिम लक्ष्य से है, जिसमें असीम सन्तुष्टि का अनुभव होता है और इस असीम सन्तुष्टि की प्राप्ति के लिए जो विधि अपनाई जाती है, उसे साधन कहते हैं।

काण्ट ने सभ्यता और संस्कृति के अन्तर को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सभ्यता बाह्य व्यवहार की वस्तु है, परन्तु संस्कृति नैतिकता की आवश्यकता होती है तथा यह आन्तरिक व्यवहार की वस्तु है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

# Sample Preview of The Chapter

*Published by:*

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

# समाज का अध्ययन
# ( STUDY OF SOCIETY )

समाजशास्त्र को समझना

## समाजशास्त्र की प्रकृति और उसका क्षेत्र

1

### परिचय

इस अध्याय के माध्यम से समाजशास्त्र के विभिन्न मूल पहलुओं की जानकारी दी गई है। इसमें सामाजिक समूहों के विवरण का वर्णन है जो समाजशास्त्र के मूल तत्त्व हैं। इस शास्त्र के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य समाज के अर्थ को स्पष्ट कराना है, साथ-ही-साथ सामाजिक समूहों व वर्गीकरण को स्पष्ट करना है, न केवल स्पष्ट ही करना, अपितु समाजशास्त्र का विज्ञान व अन्य विषयों से किस प्रकार का सम्बन्ध है, यह भी बताना है। *काम्टे, दुर्खीम, वेबर* व *मार्क्स* आदि के कथनों की विस्तृत जानकारी प्रदान करना है।

समाजशास्त्र बहुत अधिक पुराना विषय नहीं है। यह लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना विषय है। परन्तु अर्द्धशतक तक इसका प्रचार-प्रसार बहुत अधिक विस्तृत हो गया है। इसका प्रमुख कारण द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् मनुष्यों के व्यवहार को समझना था। समाजशास्त्र का मूल सम्बन्ध साधारणतया सामाजिक सम्बन्धों, समूहों व संस्थाओं के साथ रहता है।

समाजशास्त्र क्या है? समाजशास्त्र को एक संश्लेषी विज्ञान (Synthetic Science) माना जाता है, जो सामान्य नियमों, उनके उद्विकास के मौलिक नियमों से आरम्भ होता है तथा अन्तिम वास्तविकता तक पहुँचने में सहायता करता है।

### समाज व संस्कृति की संकल्पना

संस्कृति शब्द का अर्थ मुख्यत: संस्कारों से लिया जाता है। संस्कार का तात्पर्य धार्मिक क्रियाओं का सम्पादन करना है। संस्कृति को सामान्यत: भाषा, विश्वासों, लक्ष्यों, अनुभवों के परस्पर आदान-प्रदान के रूप में लिया जाता है जो परस्पर मिलकर एक अद्भुत प्रतिरूप का निर्माण करते हैं। अत: समाज के जीवन का ढंग ही संस्कृति कहलाता है।

### समाजशास्त्र का उद्भव

यूरोप में उन्नीसवीं शताब्दी में समाजशास्त्र नवीन विज्ञान के रूप में उभर कर सामने आया था, जिसका मूलभूत उद्देश्य समाज का अध्ययन करना है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने समाज के विचार को अध्ययन के विषय के रूप में स्थापित करना चाहा था, जैसे *काम्टे, स्पेंसर* व *दुर्खीम* आदि। समाज के विषय में गहन अध्ययन किया गया, जिससे प्रत्येक सदस्य की क्रियाओं, मान्यताओं और इच्छाओं की जानकारी ली जा सके।

समाजशास्त्री सामाजिक व्यवहार का सामान्य अध्ययन करता है, जिससे सामाजिक जीवन को समझने में सहायता मिलती है। साथ-ही-साथ सामाजिक मनोविज्ञान, सामाजिक नृविज्ञान, राजनीति व अर्थशास्त्र इन सबका उद्देश्य मनुष्य के सामाजिक जीवन का अध्ययन करना ही है।

उक्त विज्ञानों की अपेक्षा समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है, इसीलिए भ्रमवश कुछ लोग इसे सामाजिक कार्य समझ लेते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि समाजशास्त्र का प्रयोग सामाजिक समस्याओं को समझने और उनका विश्लेषण करने के लिए किया जाता है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



अत: यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र सामाजिक जीवन और समूहों के आपसी सम्बन्धों व सामाजिक व्यवहार का ज्ञान कराता है। सामाजिक जीवन से अवगत कराने के लिए समाजशास्त्र सामाजिक समूहों, समुदायों और संस्थाओं का अध्ययन करता है।

## सामाजिक समूह

समाजशास्त्र का आधारभूत सम्बन्ध मनुष्य के सामाजिक व्यवहार से होता है, इसीलिए आपसी व्यवहार समाज के सदस्यों का कैसा है। पारस्परिक व्यवहार समूहों में ही संभव है। अत: 'समूह' का अध्ययन करना आवश्यक है।

सामाजिक समूहों में मुख्यत: इन तत्त्वों पर जोर दिया जाता है–

1. व्यक्तियों (दो या अधिक) का समूह
2. एक ही प्रकार के व्यक्तियों के आपसी सम्बन्ध
3. आपसी सम्बन्धों का लगातार बने रहना।

समूह मुख्यत: मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार पर निर्मित होते हैं। समूह का एक जीवन्त व मूल उदाहरण–परिवार, विद्यालय, मित्रमण्डलियाँ आदि होते हैं, जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अत: किसी भी समूह का सदस्य होना व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

**सामाजिक समूहों के प्रकार**

सामाजिक समूहों को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है–

(1) प्राथमिक व

(2) गौण समूह।

**(1) प्राथमिक समूह**–इस समूह के सदस्यों के सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ व निकटतम होते हैं। साथ-ही-साथ भावनात्मक लगाव होता है, और वे एक दूसरे का विरोध भी नहीं करते। प्राथमिक समूह का सबसे उत्तम उदाहरण परिवार है जो व्यक्ति व समाज के मध्य एक मजबूत कड़ी का कार्य करता है।

**(2) गौण समूह**–प्राथमिक समूह की अपेक्षा गौण समूह में सदस्यों का आपस में बहुत ही विशिष्ट प्रकार के कार्यों के लिए सम्पर्क होता है, जो कभी-कभी ही सम्भव हो पाता है। उदाहरण के तौर पर छात्रों का वाइस चान्सलर से सम्बन्ध या नेताओं का राष्ट्रपति से सम्बन्ध आदि।

## समाजशास्त्र के मुख्य विषय

समाजशास्त्र समाज के विषय में अध्ययन करता है और समाज का विश्लेषण भी करता है। समाजशास्त्र मुख्यत: तीन प्रश्नों पर विचार व्यक्त करता है–

(1) समाज का निर्माण क्यों और कैसे होता है?

(2) समाज कैसे अस्तित्व में रहते हैं?

(3) समाज कैसे परिवर्तित होते हैं?

समाजशास्त्र समाज के विकास से सम्बन्धित है, तथा समाज में ऐतिहासिक परिवर्तन इसके द्वारा ही संभव है। उदाहरणार्थ; रूढ़िवादी जनजातीय राज्य से ग्रामीण समुदायों तक विभिन्न समाजों का विकास किस प्रकार हुआ है। गाँव वाणिज्यिक गतिविधियों व कला के प्रमुख केन्द्र बनें जो आज शहर व बड़े-बड़े नगरों में परिवर्तित हो गए हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र का सम्बन्ध सामाजिक संस्थाओं के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र से है। यही संस्थाएँ सामाजिक संरचना के रूप में अपने कार्यों को पूर्ण करती हैं। समाज में पाँच मूल संस्थाएँ होती हैं–परिवार, राजनीतिक संस्थाएँ, आर्थिक संस्थाएँ, धार्मिक व शिक्षण संस्थाएँ। जाति को भी एक संस्था का स्थान भारतीय समाज में दिया जाता है।

समाजशास्त्र के अध्ययन व विश्लेषण का एक अन्य क्षेत्र है जिसे सामाजिक प्रक्रियाओं के नाम से जाना जाता है। सामाजिक संस्थाएँ एक तरह से स्थायित्व व व्यवस्था प्रदान करती हैं, किन्तु सामाजिक प्रक्रियाएँ, सामाजिक सम्बन्धों को गतिशीलता प्रदान करती हैं।

## संस्कृति की संकल्पना

'संस्कृति' एक महत्त्वपूर्ण संकल्पना है जो समग्र जीवन की सूचक होती है, जिसे विभिन्न संस्कारों द्वारा संस्कारित होने से ही प्राप्त किया जा सकता है। संस्कृति के माध्यम से हम पुराने अनुभवों को वर्तमान से जोड़ने का कार्य करते हैं। संस्कृति को एक परिशोधन प्रक्रिया भी कहा जा सकता है, क्योंकि मनुष्य एक असामाजिक प्राणी के रूप में जन्म लेता है और विभिन्न संस्कारों में संस्कारित होने पर ही सामाजिकता ग्रहण करता है। आधुनिक युग में समाजशास्त्र के विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान, विज्ञान और कला, स्वास्थ्य और विकास आदि से सम्बन्धित समाजशास्त्र के दर्शन होते हैं।

## समाजशास्त्र और विज्ञान

समय परिवर्तन के साथ-साथ समाजशास्त्र की परिभाषाओं में भी परिवर्तन आता जाता है। समाजशास्त्र और विज्ञान दो अलग-अलग विषय हैं। जिस प्रकार समाजशास्त्र के अन्तर्गत समाज के विकास, परिवर्तन आदि का अध्ययन किया जाता है, ठीक उसी प्रकार विज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न पद्धतियों का अध्ययन किया जाता है और जिन पद्धतियों को अपनाकर घटनाओं का अध्ययन किया जाता है, उनमें नियमितता पाई जाती है। वैज्ञानिक पद्धति में घटनाओं के निरीक्षण तथा सत्यापन या विश्वसनीयता पर अधिक बल दिया जाता है। समाजशास्त्र के अन्तर्गत क्रमबद्ध रूप से घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित मुद्दों को सम्मिलित किया जाता है–

(1) शोध के लिए समस्या का चुनाव

(2) आँकड़ों का संकलन

(3) प्राक्कल्पना का निर्माण करना तथा

(4) संकल्पनाओं व सिद्धान्तों का विकास।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



समाजशास्त्र के अन्तर्गत सामाजिक जीवन के क्रमबद्ध उपायों का सदैव प्रयोग किया जाता रहा है। इसी के आधार पर विश्वसनीय ज्ञान को एकत्रित करने का प्रयास किया जाता है। इसीलिए समाजशास्त्र को भी एक विज्ञान की संज्ञा दी जाती है। *अगस्त कॉम्टे* का मत यह स्पष्ट कर देता है कि "समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का विज्ञान है।"

('Sociology is the science of social order and progress.')

**समाजशास्त्र के संस्थापक**—समाजशास्त्र के संस्थापकों में से कुछ का परिचय इसके अन्तर्गत किया जा रहा है जैसे *अगस्त कॉम्टे, दुर्खीम, मैक्स वेबर, कार्ल मार्क्स, हरबर्ट स्पेंसर* आदि। इन सभी समाजशास्त्रियों ने अपना स्थायी योगदान दिया है। इन सभी ने मानव व्यवहार को समझने व होने वाले भावी परिवर्तनों के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

**आगस्ट कॉम्टे (1798-1857)**—इन्हें आधुनिक समाजशास्त्र का संस्थापक माना जाता है। सर्वप्रथम इन्होंने ही 'समाजशास्त्र' शब्द का प्रयोग करके एक नवीन विज्ञान का निर्माण करने का प्रयत्न किया, जो न केवल भूतकाल की व्याख्या करता है, अपितु उसके भावी स्वरूप की भी भविष्यवाणी करता है। समाज सदैव ही निश्चित और नियत रूप से आगे बढ़कर पूर्णता की ओर अग्रसर होता रहता है। कॉम्टे का मानना था कि समाज तीन अवस्थाओं से होकर गुजरता है—

(1) धर्मशास्त्रीय अथवा धार्मिक अवस्था
(2) तत्त्वमीमांसीय अथवा दार्शनिक अवस्था
(3) निश्चयात्मक अथवा वैज्ञानिक अवस्था।

प्रथम अवस्था में, सभी आलौकिक शक्तियाँ परिवर्तन या प्राकृतिक घटनाओं को जन्म देती हैं।

दूसरी अवस्था में, धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की शक्तियों को ज्ञान का स्रोत माना जाता है।

तीसरी या अन्तिम अवस्था में वैज्ञानिक कानून प्राकृतिक जगत और सामाजिक जगत दोनों का निर्धारण करते हैं।

*कॉम्टे* के अनुसार दो मुख्य क्षेत्र और भी हैं—'सामाजिक सांख्यिकी' व 'सामाजिक गतिकी'। *कॉम्टे* का मानना है कि समाजशास्त्र सभी विज्ञानों में सर्वोपरि है।

**इमाइल दुर्खीम (1858-1917)**—दुर्खीम ने भी समाजशास्त्र को एक वैज्ञानिक विषय के रूप में स्वीकार किया है। 'समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम' (The Rules of Sociological Method) नाम से एक पुस्तक लिखी है, जिसमें सामाजिक निरीक्षण के कुछ विशेष नियमों को प्रतिपादित किया है। दुर्खीम ने सामाजिक एकता को मानव जीवन का मुख्य सिद्धान्त माना है। दुर्खीम ने 'यांत्रिक एकात्मकता' तथा 'जैविक एकात्मकता' के मध्य के अन्तर को पूर्णत: स्पष्ट करने का प्रयास किया है। प्रथम प्रकार की एकात्मकता परम्परागत समाजों में व्याप्त समान धारणाओं, विश्वासों और भावनाओं पर आधारित है। द्वितीय प्रकार की एकात्मकता औद्योगिक समाज में श्रम विभाजन व उनके हितों पर आधारित है। इस एकात्मकता के भंग हो जाने पर विघटन व अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

दुर्खीम के मतानुसार समाजशास्त्र व्यापक विषयों से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत धर्म, ज्ञान, कानून, शिक्षा तथा अपराध का समाजशास्त्र आदि सम्मिलित हैं।

सामाजिक तथ्य भी दुर्खीम की एक प्रमुख संकल्पना थी। यद्यपि ये व्यक्ति के ऊपर बाह्य रूप से प्रभाव डालते हैं, परन्तु फिर भी व्यक्ति इनसे प्रभावित होता है। रीति-रिवाज, लोक-रीतियाँ और लोकाचार सभी सामाजिक तथ्य के अन्तर्गत आते हैं।

सामाजिक सुधार के कार्यों से भी वे समाजशास्त्र को सम्बन्धित करने का प्रयास करते थे। उनका मानना था कि किसी भी समाज या वर्ग में परिवर्तन लाना है, तब हमें समाजशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता होती है।

अत: दुर्खीम समाजशास्त्र को एक यथार्थ, प्रत्यक्ष तथा वास्तविक विज्ञान की श्रेणी में लाने का प्रयास करते रहे।

**मैक्स वेबर (1864-1920)**—वेबर ने सामाजिक सम्बन्धों के साथ-साथ सामाजिक कार्रवाई की ओर भी विशेष ध्यान दिया है। उनका मानना है कि मनुष्य अपने व्यावहारिक स्वरूप को जिस प्रकार समझता है, उसे समझना ही सामाजिक कार्रवाई का व्यापक अध्ययन कहलाता है। सामाजिक व्यवहार, जो न केवल प्रतिमानों (Norms) का यांत्रिक ज्ञान है, अपितु वह यह जानकारी देता है कि इन मूल्यों की व्याख्या किस प्रकार की जाए, इस बात से भी अवगत कराता है। साथ-ही-साथ निरपेक्ष रूप से सामाजिक कार्रवाई का अध्ययन करता है।

*वेबर* ने प्रोटेस्टेन्ट नीतिशास्त्र और पूँजीवाद की भावना पर बल दिया। इनके माध्यम से सामान्य वैधता की प्रस्थापनाओं को विकसित करने का प्रयास किया है। उदाहरणार्थ; *वेबर* ने प्राधिकार के तीन प्रकार बताए हैं—चमत्कारी, परम्परागत और विचारशील प्राधिकार। आधुनिक समाज में भी इनका प्रयोग किया जाता है।

**कार्ल मार्क्स (1818-1883)**—*कार्ल मार्क्स* आधुनिक एवं वैज्ञानिक साम्यवाद तथा समाजवादी विचारधाराओं के सर्वमान्य जनक हैं। *मार्क्स* ने सर्वप्रथम साम्यवाद को न केवल एक नवीन और मौलिक रूप प्रदान किया, अपितु एक ऐसे सुदृढ़ वैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित किया जो दिन-प्रतिदिन दृढ़तर ही होता जा रहा है। आज के समाज में कोई भी ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ 'वाद' के मानने वाले लोग न हों। समग्र संसार में श्रमिक और क्रान्तिकारी आन्दोलन *कार्ल मार्क्स* की देन हैं। इसीलिए मार्क्स को 'अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा' का महान शिक्षक और नेता कहा जाता है। *मार्क्स* को युग प्रवर्तक विचारक की दृष्टि से देखा जाता है।

*ई. स्तेपानोवा* का विश्वास था कि मार्क्सवादी 'मानवता को पथ प्रदर्शक ध्रुव तारे की भांति, कम्युनिज़्म का मार्ग दिखा रहा है।'

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com



**हरबर्ट स्पेंसर (1820-1903)**—*स्पेंसर* ने समाज के सभी दृष्टिकोणों पर बल दिया। *स्पेंसर* का मानना है कि समाज के अन्तर्गत परिवार, राजनीति, धर्म और सामाजिक नियंत्रण, श्रम-विभाजन तथा सामाजिक स्तरीकरण के विभिन्न क्षेत्र सम्मिलित होते हैं। *स्पेंसर* के अनुसार, समाज में प्रकार्यात्मक सम्बन्ध विद्यमान रहते हैं, जो परस्पर सम्मिलित हैं। समाज का प्रयेक अंग अपना अलग-अलग कार्य करता है, जिससे समाज का कल्याण होता है। प्रत्येक समाजशास्त्री प्रकार्यवादी सम्बन्ध को महत्त्वपूर्ण मानता है।

## समाजशास्त्र तथा अन्य सामाजिक विज्ञान

समाजशास्त्र को एक विस्तृत विज्ञान माना जाता है, क्योंकि इसके अन्तर्गत सभी सामाजिक संस्थाएँ आती हैं। दूसरे विज्ञानों की अपेक्षा इसका क्षेत्र सीमित हो जाता है। परन्तु प्राय: देखा जाता है कि दूसरे विज्ञान अपने क्षेत्र की सीमा को पार करके दूसरे क्षेत्र की सीमा को लांघने में लगे रहते हैं।

**सामाजिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्र**—सामाजिक मनोविज्ञान किसी समूह विशेष का अध्ययन नहीं करता, अपितु यह तो एक व्यक्ति विशेष के अध्ययन पर बल देता है, परन्तु समाजशास्त्र इससे भिन्न है, क्योंकि यह एक निश्चित समूह का तथा उनके सम्बन्धों का अध्ययन करता है।

परन्तु इतना होते हुए भी कुछ क्षेत्र समान हैं, जैसे—सामाजिकीकरण, प्रतिमान और मूल्य। समाजशास्त्र व मनोविज्ञान दोनों ही यह ज्ञात करने का प्रयास करते हैं कि व्यक्ति का समूह पर और समूह का व्यक्ति के ऊपर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

**समाजशास्त्र और नृविज्ञान**—नृविज्ञान के विभिन्न क्षेत्र हैं, जैसे—पुरातत्त्व, भाषाशास्त्र, भौतिक नृविज्ञान और सामाजिक नृविज्ञान। वास्तव में नृविज्ञान आदिम संस्कृति का अध्ययन है, जबकि समाजशास्त्र समकालीन समाज का अध्ययन करता है।

**समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र**—समाजशास्त्र के अन्तर्गत औद्योगीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है, परन्तु अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उद्योग, उत्पादकता, श्रम, विपणन आदि कारकों का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत आर्थिक संस्थाओं का गहन अध्ययन न करके संस्थाओं और समाज के बीच आपसी सम्बन्धों के अध्ययन पर बल देते हैं।

आधुनिक युग में जीवन अत्यधिक जटिल होता जा रहा है और कोई अकेले विषय के लिए स्वतन्त्र रूप से इसका अध्ययन कर पाना संभव नहीं है। अन्य दूसरे विषयों का किस प्रकार का सम्बन्ध है, समाजशास्त्र से यह विश्लेषण करता है।

**मूल (Basic) तथा अनुप्रयुक्त (Applied) समाजशास्त्र**—समाजशास्त्रियों का कार्य मनुष्य के सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित सिद्धान्तों को विकसित करना है। मनुष्य जिस ज्ञान का प्रयोग विभिन्न प्रकार के कार्यों को पूर्ण करने के लिए कर सकें। वैसे भी समाज एक प्रगतिशील व परिवर्तनशील संरचना है, जिसका सम्पूर्ण प्रभाव समाज के व्यक्तियों के जीवन पर पड़ता है। जब तक हम सामाजिक मूल्यों का गहनता से अध्ययन नहीं कर लेते, तब तक हमें यह ज्ञात नहीं हो पाता कि समाज के सदस्यों की जीवनचर्या पर किस चीज का प्रभाव पड़ रहा है?

## बोध-प्रश्न

**प्रश्न 1. समाजशास्त्र की परिभाषा दीजिए।**

**उत्तर**—समाजशास्त्र को सामाजिक विज्ञान की एक नवीन शाखा के रूप में जाना जाता है।

'सोशियोलॉजी' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। इसकी उत्पत्ति लेटिन भाषा के 'Societus' अर्थात् 'Society' और ग्रीक के 'logos' के मेल से हुई है जिसका तात्पर्य है—'Study of Science.'

इस विषय को समाज का विज्ञान के रूप में जाना जाता है। इसके अन्तर्गत मानव के व्यवहार, सामाजिक सम्बन्धों, सहयोग की भावना आदि का अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार समाजशास्त्र वह विज्ञान है, जो मानव सम्बन्धों व सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है।

**समाजशास्त्र की विश्लेषणात्मक व्याख्या**—समाजशास्त्र शब्द के अर्थ को सरलतापूर्वक समझने के लिए समाज व शास्त्र दोनों को पृथक्-पृथक् समझना आवश्यक है—

**समाज**—सामाजिक सम्बन्धों के जाल को समाज कहते हैं। *मैकाइवर* व *पेज* ने समाज के अर्थ को स्पष्ट करते हुए अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं—'समाज, व्यवहारों एवं प्रक्रियाओं की, आकार एवं पारस्परिक सहयोग की, अनेक समूहों तथा भागों की, मानव व्यवहार के नियंत्रणों एवं स्वाधीनता की एक व्यवस्था है।'

**'शास्त्र' का अर्थ**—'किसी विषय के क्रमबद्ध ज्ञान को विज्ञान अथवा शास्त्र की संज्ञा दी जाती है।'

इस प्रकार 'समाजशास्त्र' का अर्थ है—"सामाजिक जीवन और समूहों के आपसी सम्बन्धों तथा सामजिक व्यवहार का अध्ययन करना।"

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक जीवन को पूर्ण रूप से समझने के लिए सामाजिक समूहों, समुदायों और संस्थाओं का अध्ययन करना आवश्यक है।

**प्रश्न 2. सामाजिक समूह क्या है? स्पष्ट करें।**

**उत्तर**—जब दो या दो से अधिक व्यक्ति एकत्र होते हैं, तब वे एक समूह का निर्माण करते हैं। इस प्रकार का समूह नियमित रूप से पारस्परिक सम्बन्ध बनाता है, जिनके समान विश्वास, मूल्य और समान आदर्श होते हैं।

सामाजिक समूह के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रस्तुत किए हैं, जो निम्नवत् हैं—

*बोगार्डस* के शब्दों में, "सामाजिक समूह का निर्माण करने के लिए दो या दो से अधिक व्यक्ति होते हैं और जिनका उद्देश्य एक

www.neerajbooks.com